

मूल
(संज्ञा)

प्रति

आशा नरवाधि
2312
ASHA ARCHIVES

श्रीगणेशाय नमः मथतमासा पथलकानीमकचिराकमेरकेजलावेहावासेनवुते १ चिराककेटेसमे फिट्किरीगंधकहिटदेनवुते २ मधुधुम
 नवतिमेलगायजलावेचिराककेपासफनगीनमावे ३ सर्पचमडाकेवतिताम्रचिराकमेघरकेचारकोनजलावेतवसर्पसवतमासाहोय ४ वेदभंजी
 रकेतेलसेवतिजलावेकुछघसकेभिरषदेतमासाघरश्याहनजरआवे ५ घरातीनरूपाहीकोडुरुस्तकेलिषेवेचिराकघरमेहरानैहोय ६ मछाकोपी
 जहुरकोपितघरमेजलावेभरघरपानिलेसामालुमहोय ७ पानीकाफेनवनीमेडारदेवनीमधुरहोय ८ कस्मककेभौपरापासरघेपानी
 मोनडुवे ९ गौकेसिंजमीनमेगाडकेहररोजपानीदेकोडाछनिकले १० मषिकेविष्टाबालघरगाडेजमीनमेरोजपानीदेपूदिताडवजे ११ हिंगु
 जलमेघसकेमधुमिलावेतिसमेगेहंजाडरएकरातदेभिजावेउसीमेसुषावेचिरैआकोषिलावेतोवेहोसहोय १२ गोदुधघीउषिलावेहोसहो
 य १३ मैनफलघसकेतलाउमेछिटदेरोज ४० तकमछिटिभापसेकितारमेआवे १४ धुमनकेधुराभिजावलवतिमेलपेटकजलावेपानिउ
 हिलेतोमिनवुते १५ दुधमेपुरानागुडदेकेभौटेदहिजमावेचकुसेतरासेमाफिकहोय १६ मुशलमानकेपिहिलातारिकजौशमिरहोयउस
 दिनमालकौनीकेतेलविचेउसीसेवतिजलावेउसकेधुवाभाषमेकरेपातालद्रव्यसुखे १७ कुत्ताकेजीभपिजरामेदेकेजलावेयोहिषाकभौरव
 मेकरेउस्कोकुत्तानभुके १८ गौकेचमडाएकगोहिकेकेशदेकेजमीनमेगाडेरोजवरोजपानितेपटावेकेशरकेपेटनिकसे १९ लडाइके
 चेरमेमुद्दइकेजवगौलीआवेतप्तेमेपेसावकरदेजोपेसावकरेउस्केबदनमेगेलिनलागे २० सफदगदहपुरेनाचंशलोचनपिसकेतरवा
 मेमलेतवचालीसवापचासकोशचलेतोभिगोउनदुषे २१ उलुवाचिरैकेजीभचंशलोचनरविकेरोजताम्रतावीजमेदेखहिरेतोभद्वप
 होय २२ अथहरितालषधकवोवेधककेतरकीवतयकीहरितालतोला ४ भर्कदुग्धमेपलेदिन ३ सकलकेसर्वत्तपलेदिन ३ गंधककारसमे
 लेदिन ३ तावादभर्कदुग्धमेटिकरिकरेभगहनसेमाघतकवुनावेहोहेमेभुषावेरषछोडेचैतवैशाखमेपांचसेरपीपरकाछालकेचुकनी १ हौडिमे
 तलेउपरदेकेवीचमेटिकरिदेहौडिसरपोसकेमिदिसेवंदकरेचुहापररषकरआचवचुरकीलकडियावेलकीलकडिकिदसहोतताकेवादवो

हिं डि को पलास या बेल की लकड़िके गजपुट दे ट पहर के बाद शितल के निकाले १२ तितो लाता मगलाय द भौटे तो खरी होय १ तावान गले तो शि
ला जीत वा कुक रौंधा के अरग दे के फुके तो गल जाय ० अनुपान से विमारी देष के बाये तो भिचगा होय १ जन्दी के तहीर अधपावत पकी अर्क दुग्ध
मे भिजावे दिन ३ ता को पी पल का छाल का धुरा हा डि मे दे के वीच मे रषे मुह बंद करे चुहा पर आच दे बेल या पलास की लकड़ी कि प्रहर १२ वरा वरज
व हा डि से धुवों के के तो बोहि धुला से बंद करे शीतल के उतारे षल के रषे भुइ के विचार फतल दुध मे दे के भौटे दुरुस्त होय १ षसी के जमन लेहु मे
देव ह चले १ पाने का तहीर सोन बहिरी मे कुष्ट मे चाउर भर बेल पत्र मे धिलावे जा डाम नीम पत्र मे धिलावे धातु रुद्धि के मध्यन मिश्रि मे वायु रोग मे
अव्रष के रस मे योशितु वार के साथ ४० रोज मे सोना रेसा देह होय ० तर की वता मगलावे के तावा घरिया मे लाल कर के गदह पुरे ना के भस्म देया
शिला जीत दे तो बह चले मुगा भस्म का युक्ति दुधिया पीस के मुगा दुवा दे गाइ हा के आच ४ प्रहर की देतै वार होय महिता १ पुरा ना वा स्मती के
चाउर के कोठि मे रष के निकाले चउर भर मगही पान मे दे के सुष मेल से रवाय धातु दुरुस्त होय मुक्ता पान्या त की व गोह म के भाटा पाव भर कठि
ल सात के तेहि मे ४ सेर के रोह म छरी के भाख जुदा जुदा बोहि गोली मे रष के ताको भंगुल भर विक्रि म दी चढाय के गुइ हा के गजपुट मे दे आच
देया दो प्रहर मोया भोर होने देत व निकाल के नीम का पानि से धोए जाला तो ड दे चीन के इंगुल के चढा मे दे के बंद करे विहाने निकलत व मुक्ता हो
य प्रवाल का तर की व मैसा के खिसा भौटे गजदंत के चूर्ण मीहि न भसल सिंरी फ बोज न्साथ मिलावे जव कटिल होय तव गोली करे सुष के सिं
रीफ के रंग दे चुटकी के चक्र विहाया करे तव प्रवाल होय छाहे मे भुवावे भुइ होय भख भभ्रक का पत्र छोडावे गधक पानी से भिजावे बो
हि पानि मे सोरा डार के बोहि पानी से भभ्रक मे घसे जो दुवावे मिट्टि के वासन मे भगरा जपत्र विहावे वीच मे उत दे फेर उपर जो हि पत्र मे राये
सुष पट दे के गंडा के गजपुट दे भर रात सुबह को निकाले कागजी कारस से खले इति त हीर से १ पुट दे लाल होय पर भुइ पाक होए १

अथ ककावीच २ मोफिद किरी के चुकनी दे मुख पट दे कंडा के गज पुट दे याम १ मे सिद्ध होय १ अथ क तोला ४ कल १ तोला ८ १ च १
दे के धिउ कुमारी के रस धरिया मे दे के दुवावे कंडा के गज पुट दे सिद्ध होय १ अथ सिरीफ तोला १ सिरीफ अर्क दुग्ध मे लोहा का का सज मे लोहे
का गज से खले जवतार आध से रदुध सुषेत वगोली कर के सुषावे एक तह कपडा से लपेट के मिट्टि से बंद करे सुषावे भैसिके कंडा की १ तलगा
ज पुट दे शितल के उतारे सिद्ध होय १ सिंगरि फलावे वैग मे दे के कपर मिट्टी से बंद करे के सुषावे एक छिटा कंडा की अच दे शीतल कंडा तार
सिद्ध होय १ सेर चार अद्रक के रस मे दुवाय के कंडा की आच दे जवतार सभर स सुषेत व सिद्ध होय १ अथ जस्दा के कंगहिया के पत्ता के रस दे
के जस्दा के पत्तल खले तव गुइठा के आच दे निकाल के रोहिर स मे घले पुट दे सिद्ध होय १ अथ स्वर्ग मासा १ तोना २ दुरति सिता के धरिया मे रस
के आच दे निकाल के कागजी के रस मे घले गोलि करे फेर आच दे याम धरि मे कपर मिट्टि दे के बन गुइठा के आच दे सिद्ध होय १ अथ ताम्र ताम्र के दोतह
कागज के बरोबर पत्तल करे धिकाय के कहु तेल मे घुसावे वार ७ ददि मे ७ गुंजा के रस मे ७ तव टकरा कर के कपर मिट्टि के वीच मे दे के याम ५ कंडा के आ
च दे शीतल के उतारे घल करे विजया अमृ से खल के टिकरी बांधे गुठा के आच दे ५ ७ दफे सिद्ध होय १ अथ पुलाद लोह के चिना के रस मे घसे ४ प्र
प्रहर मे सुख होय तव सिद्ध होय १ सफेद ताम्र के तरकीब नौ सादर मासा ३ संभल चार मासा ३ सराक नीम कट बन गुइठा के नीचे रख कर गर करे ज
व रुकर ग होय तव निकाल के चणस मान गोली करे पैसा भर ताम्र लाल कर के एक गोली रख दे तव ता वा सफेद होय १ पुलाद के पुलाद को धुरा
करे २ दिन २ रात गौत मे घले जो मिजावे वाद धिउ कुमारी के रस मे घले टी करी के सुषावे बन कंडा मे आच दे १ सहि धिउ कुमारी मे घल के आच दे द
फे १४ वाद घोंघि मे टुका के अराम मे खल के सुर्याय के आच दे वाद गौ के दुग्ध मे ३ सि युक्ति से सिद्ध होय

श्वदनश्चालरक्षस्तथैवच राजकाथोमिहोत्थाशुजलमेहेसुदाहणं १ अथेशुमेहः इक्षोरसाभंचालर्थमधुरं चेशुमेहतः धन्वयासार्जुनौपाठाविडुमानां
कषायकः इक्षुमेहंतिहंत्वाशुसगुडंवाजयाशतं २ अथसोदमेहः साद्रीमवेत्युपितंसाद्रमेहनमूत्रितंउभेहनिद्रेतगरविडंगंजलेश्रुते सक्षौद्रंचपिवेत्काथं
सगुडंशुलोद्भवं ३ अथसुरामेहः सुरामेहीसुरातुल्यमुपर्यद्धमधोचन अर्जुनौदीपाक्षकुष्ठंविशालात्राश्रुतंपिवेत् सक्षौद्रंवासुरामेहेनिबध्नाथंगुडान्वितं
४ अथपिष्टमेहः सहृष्टोमापिष्टेनपिष्टचदहलंसितं दावीविडंगंखदिरध्वकाथः समाक्षिकः पिष्टमेहेथवापथाकाथोगुडसमंन्वितः ५ अथशुकमेहः
शुकामंशुकमिश्रंवाशुकमेहीप्रमेहतिः वदनागुरुकुष्ठारव्यसुरदाहकषायकः मधुनासंयुतः पीतः शुकमेहांतंकोमवेत् हर्षामूर्वीसमंगाचमूलंघकसका
शयोः दंतीशाकालिनिर्व्यूहः शुकमेहंहरे अहात् ६ अथसिकतामेहः मूत्रेणसिकतामेहीसिकताहृपिणोमलान् मलान्मेदः प्रमृतीन्प्रमेहनीत्यर्थः दावं
ग्निमंथत्रिफलापाठाकाथः समाक्षिकः सिकतामेहहावाथसगुडंविचकश्रुतं ७ अथशीतमेहः शीतमेहीनुबहुशोमधुरंभृशशीतलं चव्यमूर्वीकंठका
रीकाथः क्षौद्रसमंन्वितः शीतमेहंहरत्यासुकफवातविनाशतः दिगुंजंपाययेदन्नरसमातदभैरवं पाठांजुनविडंगोत्थकाः पायंमधुसंयुतं अनुपानंप्र
दात्वातस्यमेहस्यशान्तये ८ अथशनैमेहः शनैः शनैः शनैर्मैहेमंदंमंदंप्रमेहति यवाभयादिन्नहहावालकात्रांशुतंपिवेत् क्षौद्रयुक्तंशनैर्मैहिसगु
डंखदिरश्रुतं ९ अथलालामेहः लालातंतुपुतंमूत्रंलालामेहेनपिद्धिलं नखशिवाससपर्णचित्रकात्रांशुतंहितं लालामेहेनुसक्षौद्रंदीपनंपाचनंपहं
मृतसूताभ्रवंगानांतुल्यंभागंप्रकल्पयेत् महानिंबस्यवीजोत्थं चूर्णं योज्यं त्रिभिः समं मधुनालेहयेन्माषंलालामेहप्रशान्तये सक्षौद्रारजनीचानुलेखा
निकत्रयेसदा १० अथक्षारमेहः गंधर्वारसस्यर्शैः क्षारेणक्षारतोयवत् उशीरं चंदनंलोध्रमर्जुनंकाथयेत्समं मधुशुक्तंप्रदात्वांक्षारमेहप्रशान्त
ये धात्रिपटोलनिंबानां कषायंचमृताघसं सक्षौद्रंपाययेच्चातुसर्वमेहापनुत्तये ११ अथनीलमेहः नीलमेहेननीलामंमेहीमूत्रेणमूत्रयेत् एतस्य
वाअकतुल्यंधात्रिफलनिजद्रवैः ससाहंभावयेत्स्वल्पेयोगोयंहरिसंकरः माषमेकोवटीत्वादेनीलमेहप्रशान्तये महानिंबस्यवीजानिपूर्ववत्तडुलोद

श्री. वि.
॥३॥

कैः सद्यते पाययेन्नीलप्रमेहाप्रतिमुच्यते १२ अथ कालमेहः कालमेहेन कालाभमेही मूत्रं नु मूत्रयेत् लोधाजुनमुशीरचचंदनामंश्चतुर्विधं सौ
द्रं कालमेहादौः थोवाहै मवनी घनं उशीरामलककाथः सक्षौद्रः कालमेहहृत् १३ अथ हारितमेहः हारिडुमेही कटुकं हारिडुं सविमं रहन् रहन् रास
मुक्तलोप्रवालकसंयुक्तं चंदनं धातकी तथा कषायं क्षौद्रं संयुक्तं हारिडुं लघुपाययेत् पटोलनिंवा मलकं गुडचीना कषायकं सक्षौद्रं पाययेद् द्योमेहहारी
द्रसंज्ञके १४ अथ मांजिष्टमेहः विस्रं मांजिष्टमेहेन मंजिष्टा सलिलोपमं गुस्ताभया मुक्कुरा काथो मधुसमन्वितः अथ बाधान्नीलोप्रकृतकासीयव
शृतं सक्षौद्रं हरते तूरी मंजिष्टा मेहमुक्तं १५ अथ रक्तमेहः विस्रमुक्कं सलवणं रक्ताभरक्तयेताः शोल वृद्ध रसं वा देद्रुक्तमेहप्रशान्तये रीमकोष्ट
कषायं च कगोलयुक्तं पिवेद् नु रक्तमेहप्रशान्तये योज्यं वा मृतमभ्रकं चिविस्रमुशीराली मूलं चूर्तं क्षौद्रसितायुतं कर्षकं लेहयेच्चानुरक्तमेहप्रशान्त
ते १६ अथ वसामेहः वसामेही वसीमिश्रं वसामं मूत्रयेन्मूः अविमंथ कषायं नु वसामेही पिवेन्नरः तर्कारिका पाटलिका काथो वातहरे दुते १७ अथ म
ज्जप्रमेहः मज्जाभं मज्जमिश्रं वा मज्जमेही मुहुर्मुहुः काथः काश्यप्यं च नु रतिं दकास्त्रा मनाकतः द्विआवृत्ति कषायेण पाठा कुटजरा महे तित्ता कुप्यं च स चूर्तये
सर्पिमेहोपिवेन्नरः सर्पिमज्जा १८ अथ क्षौद्रमेहः कषायं मधुरं रसं क्षौद्रमेहं पदे दुधः कषायपर्णं मृतं मृतं मृतं च ठामं नु न स्यत्वं सलिलं लघुपायं मर्दये
तवल्बे शां मल्या मूलजद्रवैः दिनाते वटिकां कृत्वा माषमात्रं प्रयोजयेत् कायं शां लालि मूला नाम मधुना चानुपाययेत् क्षौद्रमेहोतको वा मर्दसः क्षौद्रप्रमे
हजितं त्रिफलाया लु मधुना लेहः क्षौद्रप्रमेहजित १९ अथ हस्तिमेहः हस्ती मज्जद्रवा जस्रमूत्रयेगविचर्जितं सत्तमसीकं विचद्रु च हस्तिमेही प्रमेहति पाठ
शीरीषदुस्पर्शी मूर्वा तिंदुक किंशुकं कपिस्थानां च हस्तिमेहे प्रयोजयेत् २० अथ मधुमेहः सर्वस्वप्रमेहात् कालेनाप्रतिकारिणः मधुमेहस्य अथ
तितराः साध्या भवन्ति हि मधुरं यच्च तेषु प्रायो मधिवमेहति सर्वपि मधुमेहारण्या मधुर्यापितनोरनः गो कं कं च तत्तल मूलफलं

लशतेकथितं न तो ये पादस्थितेन सलिलेन पलानि दत्वा पंचाशतेन विपचेदथ शर्करायाः तस्मिन् च न त्वमुपगच्छति चूर्णितानि दद्यात्पलद्वयमितानि सु-
षेण जानि अंठी कणामरि च त्रागदल त्वगे ला जाती पकोश ककुभत्रयुसस्य बीजं वांसी पलाष्टक मिट्टं प्रणिधाय त्रितयं नेहं सुसिद्धं मम पलसं निनं-
हेत्वा शुभ्रं परि दाहयि वंधुशुक्र रुद्धाश्मरी रुधिरमेह मधुप्रमेहान् गोक्षुरकादिलेहः दापयेत् यगुं जाया मूलक्षोरेण संयुतं मधुमेहप्रणुत्यथै स स-
राप्रहिताग्निने २१ अथ प्रमेहपिठकाः तन्नादौ शराविका अत्रोन्नना च न दुपानि मम मध्याशराविका शराविकाद्याः पिठकाः साधयेद्यथ वडिषक-
पकाचिकित्सा व्रणवन्नास्यं पातैर्युक्तास्यते काथोवनस्य नेर्वस्तौ तीक्ष्णं मूत्रं च शोधनं २२ अथ ककुपिका सदाहा कूर्मसंस्थाना

आशा नरकाधि

23/2

ASHA ARCHIVES